उत्तराखण्ड राज्य प्रशासन में पुलिस की भूमिका : एक अध्ययन

कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
की
पी–एच0डी0 (इतिहास)
उपाधि हेतु
प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

Estelar

शोध निर्देशक :

प्रो0 अनिल जोशी
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
एस0एस0जे0परिसर, अल्मोड़ा
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,नैनीताल।

शोध छात्रः

गिरीश चन्द्र पाटनी
इतिहास विभाग डी0एस0बी0 परिसर,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,नैनीताल।

2016

शपथ–पत्र

मैं यह घोषणा करता हूँ कि मेरा यह शोध प्रबन्ध **''उत्तराखण्ड राज्य प्रशासन में पुलिस की भूमिका : एक अध्ययन''** सर्वथा मौलिक है। इस शोध कार्य में जिन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का मैंने उपयोग किया है, उनका समुचित उल्लेख यथा स्थान सन्दर्भ संख्या के साथ किया गया है। मैंने यह शोध कार्य प्रो0 अनिल जोशी, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, एस0एस0जे0 परिसर अल्मोडा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल के निर्देशन में पूरा किया है।

(गिरीश चन्द्र पाटनी)
इतिहास विभाग
डी0 एस0 बी0 परिसर,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल

Estelar

KUMAUN UNIVERSITY
NAINITAL

Anil K. Joshi
Professor

Department of History
S.S. J. Campus, Kumaun University
Almora - 263601
Mobile : +91 9412926566
e-mail : aniljoshi.rkt@gmail.com
aniljoshi_rkt@rediffmail.com

शोध निर्देशक का प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि गिरीश चन्द्र पाटनी, शोध छात्र, इतिहास विभाग, डी0 एस0 बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल ने शीर्षक **उत्तराखण्ड राज्य प्रशासन में पुलिस की भूमिका : एक अध्ययन** पर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध विभाग में नियमित रुप से उपस्थित रहकर मेरे निर्देशन में लिखा है। इनका यह अनुसंधान कार्य पूर्णतः मौलिक है और इन्हीं के द्वारा सम्पन्न किया गया है। इस कार्य के लिए कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा समय की न्यूनतम अवधि एवं उपस्थिति को भी इन्होंने पूर्ण कर लिया है।

अतः इनका यह शोध प्रबन्ध सुधी परीक्षकों द्वारा परीक्षण हेतु विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध निर्देशक

(प्रोफेसर अनिल जोशी)
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग,
एस0 एस0 जे0 परिसर,अल्मोड़ा

Estelar

आभार

यह शोध कार्य सिर्फ मेरी मेहनत नहीं है, बल्कि इसके पीछे अनेक लोगों का योगदान रहा है। इस शोध प्रबन्ध हेतु मैं निम्नलिखित समस्त महानुभावों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

- इस विषय को लेने की प्रेरणा तथा इस विषय पर कैसे काम हो, इसका मार्ग निर्देशन मुझे मेरे प्रिय गुरु एवं निर्देशक प्रो0 अनिल जोशी, परिसर विभागाध्यक्ष एस0 एस0 जे0 परिसर अल्मोड़ा कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल से मिला। उनके निर्देशन एवं प्रोत्साहन के लिए।
- डी0एस0बी0 परिसर नैनीताल के इतिहास विभाग से विभागाध्यक्ष प्रो0 गिरधर सिंह नेगी, डॉ0 संजय घिल्डियाल, डॉ0 सावित्री कैड़ा जन्तवाल, डॉ0 भुवन शर्मा, डॉ0 भुवन आर्या तथा शिवराज सिंह कपकोटी का जिनसे सदैव सहयोग प्राप्त हुआ।
- केन्द्रीय पुस्तकालय कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल के समस्त कर्मचारियों का जिनके सहयोग से मुझे पुस्तकालय में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ।
- एस0 एस0 जे0 परिसर अल्मोड़ा के इतिहास विभाग के प्रो0 दया पंत, डॉ0 संजय टम्टा, डॉ0 सी0 एम0 अग्रवाल, डा0 वी0 डी0 एस0 नेगी जिनसे मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।
- डा0 माधवी जोशी एवं डा0 निशा आर्या जिनसे शोध कार्य में पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।
- अपने मित्रों संजय शाह, नवीन रजवार, डॉ0 माधवी जोशी, कौस्तुभ जोशी, डॉ0 भुवन मठपाल, डॉ0 ललिता बिष्ट साह, मनोहर चंद आदि शोधार्थी मित्रों एवं शुभचिन्तकों जिनका मुझे हमेशा सहयोग मिलता रहा।
- अपने बड़े भैय्या श्री किशोर चन्द्र पाटनी (प्रवक्ता) व अपनी भाभी श्रीमति दीपा पाटनी व बच्चों मुक्ता, दीपांशु के स्नेह व सहयोग के फलस्वरूप यह कार्य पूर्ण हुआ, उनको दिल से आभार।

Estelar

- अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रचना पाटनी जिसने पल–पल मुझे अपार सहयोग व स्नेह प्रदान कर इस कार्य को पूर्ण करने में अपना योगदान दिया तथा अपने पुत्र चिरंजीवी कल्पित जिसके स्नेह के फलस्वरूप यह कार्य पूर्ण हो सका।
- अंत में अपनी माता जी श्रीमति मनोरमा पाटनी एवं पिताजी श्री हरीश चन्द्र पाटनी जी के प्रति मैं कृतज्ञता जाहिर करते हुए चरणों में प्रणाम अर्पित करता हूँ कि इतने लम्बे समय तक अपना धैर्य बनाये रखा और हर कदम पर मुझे सहायता एवं प्रोत्साहन देते रहे। उनके प्रति दिल से कृतज्ञता प्रकट करते हुए मैं यह शोध ग्रंथ उन्हीं को समर्पित भी कर रहा हूँ।

दिनाँक– **गिरीश चन्द्र पाटनी**

Estelar

आमुख

प्राचीनकाल से ही शासन और सुरक्षा प्रशासन का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है, प्रत्येक देश के सम्मुख सुरक्षा एक प्रमुख चुनौती होती हैं, चाहें वह आन्तरिक हो या वाह्य, जहॉ वाहय सुरक्षा की जिम्मेदारी देश की सीमाओं में लगे सेनाओं के अधीन होती है वही आन्तरिक सुरक्षा की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी पुलिस प्रशासन के हाथों में होती है। जन सुरक्षा हो या नेताओं की सुरक्षा या अन्य कोई घटना, पुलिस के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौती होती है। जहाँ वाह्य सुरक्षा को खतरा पहुंचाने वाले अमुवन परोक्ष होते हैं वहीं आन्तरिक सुरक्षा को क्षति पहुंचाने वाली घातक तत्व अपरोक्ष होते है। इसलिए पुलिस प्रशासन के लिए चुनौतियॉ बढ़ जाती है।

09 नवम्बर, 2000 को अस्तित्व में आये पर्वतीय राज्य उत्तराखण्ड जहॉ अस्तित्व में आने से पहले प्रायः शांतिप्रिय क्षेत्र माना जाता था वही अस्तित्व में आने के बाद इस क्षेत्र में उपद्रवी तत्वों की संख्या में लगातार बढोत्तरी हुई है – चोरी, डकेती, हत्या, महिला हिंसा, भू–माफिया, तस्करो की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है, ऐसी परिस्थिति में इन सबसे निपटकर और क्षेत्र में शांति एवं जनता को सुरक्षा प्रदान करना पुलिस के लिए महत्वपूर्ण चुनौती है जिस कारण पुलिस का महत्व और कार्यक्षेत्र लगातार बढ़ा है।

पुलिस प्रशासन की भूमिका और चुनौतियों जैसी प्रासांगिक विषय पर शोध करने की आवश्यकता थी इस विषय पर शोध करने का सुझाव एवं प्रेरणा मेरे निर्देशक प्रो0 अनिल जोशी जी ने सुझाया। प्रस्तुत शोध की विस्तृतता को देखते हुए शोध विषय को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में शोध की प्रस्तावना तथा प्रस्तावित रूपरेखा के अन्तर्गत अध्ययन की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए उक्त समस्या का चयन क्यों किया गया है। इसको उल्लेखित किया गया है।

द्वितीय अध्याय में भारत व उत्तराखण्ड में पुलिस का संकल्पनात्मक स्वरूप तथा उत्तराखण्ड में पुलिस की प्रस्तावित ऐतिहासिक परिकल्पना को स्पष्ट किया गया है।

Estelar

तृतीय अध्याय में प्राचीन भारत में पुलिस तथा उत्तराखण्ड में प्राचीन समय में पुलिस के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही प्राचीनकालीन उत्तराखण्ड की प्रशासनिक स्थिति को समझाने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में मध्यकालीन भारत में पुलिस तथा उत्तराखण्ड पर आधारित तथ्यों का वर्णन किया गया है। साथ ही मध्यकालीन उत्तराखण्ड के स्वरूप तथा उसमें पुलिस की भूमिका किस प्रकार की रही इसका वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में आधुनिक भारत में पुलिस तथा उत्तराखण्ड का वर्णन किया गया है। इस अध्याय में मुख्य रूप से ब्रिटिश तथा पूर्व ब्रिटिश कालीन भारत में पुलिस के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

षष्टम अध्याय में स्वतंत्र भारत में एवं उत्तराखण्ड राज्य में पुलिस के स्वरूप एवं भूमिका का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

सप्तम अध्याय में सम्पूर्ण शोध का सारांश, निष्कर्ष एवं उपायदेयता का विवरण प्रस्तुत किया गया है साथ ही भविष्य में सम्बन्धित दिशा में शोध हेतु सुझावों का विवरण भी दिया गया है।

Estelar

–अनुक्रमणिका–

क्र0सं0	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय –		**1–16**
1–	प्रस्तावित आधार –	
1.1–	प्रस्तावना।	
1.2–	अध्ययन की आवश्यकता।	
1.3–	समस्या का चयन।	
1.4–	समस्या का परिभाषिकरण।	
1.5–	अध्ययन का उद्देश्य।	
1.6–	अध्ययन विधि ।	
1.7–	अध्ययन की सामान्य रूपरेखा एवं अध्यायीकरण।	
द्वितीय अध्याय –		**17–56**
2–	भारत व उत्तराखण्ड में पुलिस का संकल्पनात्मक स्वरूप तथा उत्तराखण्ड में पुलिस की प्रस्तावित ऐतिहासिक परिकल्पना –	
2.1–	भारत व उत्तराखण्ड में पुलिस का संकल्पनात्मक स्वरूप–	
2.1.1–	पुलिस की संकल्पना।	
2.1.2–	भारत में पुलिस का स्वरूप।	
2.1.3–	भारत में पुलिस की रूपरेखा।	
2.1.4–	उत्तराखण्ड पुलिस का स्वरूप।	
2.1.5–	उत्तराखण्ड में पुलिस की रूपरेखा।	

Estelar

2.2– उत्तराखण्ड में पुलिस की प्रस्तातिव ऐतिहासिक परिकल्पना–

2.2.1– प्राचीन कालीन पुलिस का स्वरूप।

2.2.2– मध्यकालीन पुलिस का स्वरूप।

2.2.3– आधुनिक कालीन पुलिस का स्वरूप।

2.2.4– स्वतन्त्रता के पश्चात पुलिस का स्वरूप।

तृतीय अध्याय – 57–87

3– प्राचीन भारत में पुलिस व उत्तराखण्ड–

3.1– प्राचीन भारत में पुलिस का स्वरूप।

3.2– प्राचीन भारत में पुलिस की भूमिका।

3.3– प्राचीन भारत में पुलिस का कार्यक्षेत्र।

3.4– प्राचीन भारत में पुलिस की आवश्यकता।

3.5– प्राचीन भारत में उत्तराखण्ड का स्वरूप उसमें पुलिस की भूमिका–

3.5.1– प्राचीन भारत में उत्तराखण्ड राज्य की स्थिति।

3.5.2– प्राचीन भारत में उत्तराखण्ड की राजनीति स्थिति तथा पुलिस की भूमिका।

3.5.3– प्राचीन भारत में उत्तराखण्ड राज्य की सामाजिक स्थिति तथा पुलिस का प्रभाव।

3.5.4– प्राचीन भारत में उत्तराखण्ड राज्य की प्रशासनिक स्थिति तथा पुलिस की आवश्यकता।

चतुर्थ अध्याय – 88–127

4– मध्यकालीन भारत में पुलिस व उत्तराखण्ड –

4.1– मध्यकालीन भारत में पुलिस का स्वरूप।

4.2– मध्यकालीन भारत में पुलिस की भूमिका।

Estelar

4.3– मध्यकालीन भारत में पुलिस का कार्यक्षेत्र।

4.4– मध्यकालीन भारत में पुलिस की आवश्यकता।

4.5– मध्यकालीन भारत में उत्तराखण्ड का स्वरूप उसमें पुलिस की भूमिका–

4.5.1– मध्यकालीन भारत में उत्तराखण्ड राज्य की स्थिति।

4.5.2– मध्यकालीन भारत में उत्तराखण्ड की राजनीतिक स्थिति तथा पुलिस की भूमिका।

4.5.3– मध्यकालीन भारत में उत्तराखण्ड राज्य की सामाजिक स्थिति तथा पुलिस का प्रभाव।

4.5.4– मध्यकालीन भारत में उत्तराखण्ड राज्य की प्रशासनिक स्थिति तथा पुलिस की आवश्यकता।

पंचम अध्याय – **128–171**

5– आधुनिक कालीन भारत में पुलिस तथा उत्तराखण्ड –

5.1– आधुनिक भारत में पुलिस का स्वरूप।

5.2– आधुनिक भारत में पुलिस की भूमिका।

5.3– आधुनिक भारत में पुलिस के कार्यक्षेत्र।

5.4– आधुनिक भारत में पुलिस की आवश्यकता।

5.5– आधुनिक भारत में उत्तराखण्ड का स्वरूप उसमें पुलिस की भूमिका–

5.5.1– आधुनिक भारत में उत्तराखण्ड राज्य की स्थिति।

5.5.2– आधुनिक भारत में उत्तराखण्ड की राजनीतिक स्थिति तथा पुलिस की भूमिका।

5.5.3– आधुनिक भारत में उत्तराखण्ड की सामाजिक स्थिति तथा पुलिस का प्रभाव।

Estelar

5.5.4– आधुनिक भारत में उत्तराखण्ड की प्रशासनिक स्थिति तथा पुलिस की आवश्यकता।

षष्टम् अध्याय – **172–219**

6– स्वतन्त्र भारत में उत्तराखण्ड राज्य का स्वरूप तथा उसमें पुलिस की भूमिका–

6.1– स्वतन्त्र भारत में उत्तराखण्ड राज्य का स्वरूप।

6.1.1– उत्तराखण्ड राज्य की स्थिति एवं अस्तित्व।

6.1.2– उत्तराखण्ड राज्य की राजनैतिक स्थिति।

6.1.3– उत्तराखण्ड राज्य की सामाजिक स्थिति।

6.1.4– उत्तराखण्ड राज्य की प्रशासनिक स्थिति।

6.2– स्वतन्त्र भारत में उत्तराखण्ड पुलिस की भूमिका–

6.2.1– पुलिस का संरचनात्मक स्वरूप।

6.2.2– पुलिस के लिए अपराध नियन्त्रण हेतु बनाये गये नियम व कानून।

6.2.3– पुलिस द्वारा जिले तथा अपने क्षेत्र में अपराध नियन्त्रण।

6.2.4– पुलिस व समाज।

सप्तम् अध्याय – **220–252**

7– सारांश, निष्कर्ष एवं उपादेयता–

7.1– शोध कार्य का सारांश।

7.2– शोध कार्य के निष्कर्ष।

7.3– शोध कार्य की शैक्षिक उपादेयता, सार्थकता एवं परिसीमायें।

7.3.1– अध्ययन की परिसीमायें

7.4– भविष्य में सम्बन्धित दिशा में शोध हेतु सुझाव।

Estelar

– प्रथम अध्याय –

1– प्रस्तावित आधार –

1.1– प्रस्तावना।

1.2– अध्ययन की आवश्यकता।

1.3– समस्या का चयन।

1.4– समस्या का परिभाषिकरण।

1.5– अध्ययन का उद्देश्य।

1.6– अध्ययन विधि।

1.7– अध्ययन की सामान्य रूपरेखा एवं अध्यायीकरण।

Estelar